

## भारत में टाइफाइड के नदिन में वडिल टेस्ट

**स्रोत: द हट्टि**

भारत में **टाइफाइड** के नदिन के हेतु वडिल टेस्ट के व्यापक उपयोग ने सार्वजनिक स्वास्थ्य परबंधन के लिये इसकी सटीकता और नहितार्थ के वषिय में चितारै बढा दी है।

- **वडिल टेस्ट**, एक तीव्र रक्त परीक्षण, अपनी सीमाओं और गलत परिणामों की प्रवृत्तिके बावजूद, टाइफाइड बुखार के नदिन के लिये भारत में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
- **सालमोनेला टाइफी बैक्टीरिया (Salmonella typhi bacteria)** के कारण होने वाला टाइफाइड, **दूषित भोजन एवं जल के सेवन** से फैलता है, जो तेज़ बुखार, पेट दर्द, कमजोरी, मतली, उल्टी और त्वचा संबंधी रोग जैसे लक्षणों के साथ आंत्र ज्वर के रूप में उत्पन्न होता है।
  - कुछ वाहक महीनों तक बैक्टीरिया छोड़ते हुए लक्षण रहति रह सकते हैं, उपचार न होने पर **मलेरिया** और **इनफ्लुएंजा** जैसी अन्य बीमारियों की तरह जीवन के लिये जोखिम बन सकता है।
- किसी मरीज़ के रक्त या अस्थिभिज्जा से रोगाणुओं को अलग करना और उन्हें प्रयोगशाला में वकिसति करना टाइफाइड के नदिन के लिये स्वर्ण मानक है, लेकिन इस प्रक्रिया में समय लगता है तथा अत्यधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है।
- **वडिल टेस्ट बैक्टीरिया के वरिद्ध एंटीबॉडी का पता लगाता** है, परंतु पूर्व एंटीबायोटिक उपचार तथा अन्य संक्रमण या टीकाकरण से एंटीबॉडी के साथ क्रॉस-रिएक्टिविटी जैसे वभिन्न कारकों के कारण **सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम दे सकता है**।
  - टाइफाइड के गलत नदिन से उपचार में देरी और जटलितारै हो सकती है, जो भारत में **इस बीमारी की अस्पष्ट पहचान करने में सहायक होती है**।
- वडिल टेस्ट द्वारा एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग **रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR)** में योगदान देता है, जो एक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा उत्पन्न करता है।
- टाइफाइड की चुनौतियों से निपटने के लिये नदिन तथा AMR निगरानी तक बेहतर पहुँच महत्त्वपूर्ण है।

और पढ़ें: [टाइपबार टाइफाइड का टीका](#)